संस्कृत कैसे सीखें ?

How to Learn Sanskrit ?

पूनम यादव[1], योगेश शर्मा[2]

Poonam Yadav[1], Yogesh Sharma[2]

[1]प्रोजेक्ट एसोसिएट – कलाकोश विभाग, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

[2]सह आचार्य – कलाकोश विभाग, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

Email ID : poonampsp242@gmail.com, Email ID & Ycsharma2000@yahoo.co.in

पूर्ववर्ती लेख में संस्कृत अवबोध हेतु आवश्यक तत्त्वों (संस्कृत वर्णमाला, उच्चारण स्थान, शब्दरूप, सन्धि, समास, लकार, उपसर्ग, प्रत्यय, कारक आदि) का संक्षेप में उपस्थापन किया गया एवं इनके आधार पर विभिन्न वाक्यों का निर्माण भी किया गया। संस्कृत में वाक्य निर्मिति हेतु उपर्युक्त तत्त्वों के विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता है। आगे आने वाले लेखों के अंतर्गत संस्कृत के सम्यक् अवबोध एवं प्रयोग को समझने हेतु उपर्युक्त इन सभी तत्त्वों का पृथक् पृथक् विस्तार से विवेचन किया जायेगा। अतः इसी श्रृंखला में प्रस्तुत लेख के माध्यम से वाक्य निर्मिति के आवश्यक अवयव शब्द, लिंग, वचन, पुरुष, धातु(क्रिया) का विवेचन किया जा रहा है।

संस्कृत भाषा में वाक्य निर्माण शब्दरूप (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय आदि शब्दों के रूप), धातुरूप (पठ् अर्थात् पढना, खाद् अर्थात् खाना नृत् अर्थात् नृत्य करना, वद् अर्थात् बोलना, लिख् अर्थात् लिखना आदि क्रियाओं के रूप), लिंग, वचन, पुरुष आदि के समुचित अन्वय से पूर्ण होता है।

शब्द

वर्णों के मेल को शब्द कहते हैं, जैसे–र्+आ+म्+अ= राम। ये विभिन्न प्रकार के होते हैं, जैसे– संज्ञा शब्द, सर्वनाम शब्द, विशेषण शब्द, अव्यय शब्द, क्रियावाची शब्द (धातु) आदि।

संज्ञा शब्द–

किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं, जैसे– पुस्तकम् (पुस्तक–वस्तु का नाम), महेशः (व्यक्ति का नाम), जयपुरम् (स्थान का नाम) आदि।

सर्वनाम शब्द–

संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त किए जाने वाले सर्व, तद्, इदम्, अस्मद् युष्मद् आदि शब्द सर्वनाम कहलाते हैं, जैसे– अहम् (मैं), त्वम् (तुम), सः (वह पुरुष), सा (वह स्त्री), तत् (वह नपुंसकलिंग) आदि।

विशेषण शब्द–

विशेष्य (संज्ञा या सर्वनाम) की विशेषता बताने हेतु प्रयुक्त किए जाने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं, जैसे– कृष्णः अश्वः (काला घोडा)–यहाँ 'अश्वः' की विशेषता बताने हेतु 'कृष्णः'शब्द का प्रयोग किया गया है, अतः 'कृष्णः' शब्द विशेषण है।

विशेषण के भेद–

- **गुणवाचीविशेषण**– श्वेतं वस्त्रम् (सफेद वस्त्र), श्रेष्ठः कविः (श्रेष्ठ कवि), धीमान् पुरुषः (बुद्धि मान् पुरुष), नीलं कमलम् (नीला कमल), कुटिला नदी आदि।
- **संख्यावाची**– एकः छात्रः (एक छात्र), द्वौ बालकौ (दो बालक), त्रयः घटाः (तीन घडे), एका नदी, बहवः राजानः (बहुत सारे राजा आदि।
- **परिमाणवाची**– द्रोणो व्रीहिः (एक द्रोण परिमित चावल), क्रोशं मार्गम् (एक कोशभर मार्ग), आदि।
- **आवृत्तिवाची**– द्विगुणं धनम् (दोगुना धन), त्रिगुणः लाभः (तीन गुना लाभ) आदि।
- **समुदायवाची**– द्वावपि छात्रौ (दोनों छात्र), द्वात्रिंशदपि सैनिकाः (बत्तीस सैनिक) आदि।
- **क्रियावाची** – शीघ्रं गच्छति (जल्दी जाता है), तीव्रं धावति (तेज दौडता है) आदि।

अव्यय शब्द – यथा, तथा, पुनः, यद्यपि, तथापि, यदि आदि।

लिंग

संस्कृत में लिंग के तीन प्रकार हैं –

1. **पुल्लिंग**– जिस शब्द से पुरुष जाति का बोध हो, वह पुल्लिग शब्द कहलाता है, जैसे– रामः, (राम नाम का पुरुष), विकासः (विकास नाम का पुरुष), अश्वः (घोडा) आदि।
2. **स्त्रीलिंग**– जिस शब्द से स्त्री जाति का बोध हो, वह स्त्रीलिंग शब्द कहलाता है, जैसे– रमा (रमा नाम की स्त्री), कविता (कविता नाम की स्त्री), अवन्तिका (अवन्तिका नाम की स्त्री), नदी, अजा (बकरी) आदि।
3. **नपुंसकलिंग**– जिस शब्द से न पुरुष जाति एवं न ही स्त्री जाति का बोध हो, वह नपुंसकलिंग शब्द कहलाता है, जैसे–पुस्तकम् (पुस्तक), फलम् (फल), व्यजनम् (पंखा), वनम् (वन), धनम् (धन) आदि।

लिंग निर्धारण–संस्कृत भाषा में प्रायः शब्द के अंतिम वर्ण, शब्द में प्रत्यय, समास, शब्द के अर्थ (मासवाची, ऋतुवाची, रसवाची–कटु, तिक्त आदि, वर्ण (रंग)वाची, देवतावाची, असुरवाची, देव अथवा असुर के अनुचरवाची, अंगवाची शब्द) आदि के आधार पर लिंग का निर्धारण किया जाता है–

पुल्लिंग–

1. जिन शब्दों के अन्त में अकार, इकार, उकार, नकार (अ, इ, उ, न, वर्ण) आदि वर्ण हों, वे प्रायः पुल्लिग शब्द होते हैं–

- शब्दों के अन्त में अकार (अ) वर्ण–
  - नर (मनुष्य) – न्+अ+र्+अ
  - बालक – ब्+आ+ल्+अ+क्+अ
  - पुत्र – प्+उ+त्+र्+अ
- शब्दों के अन्त में इकार (इ) वर्ण –
  - हरि (विष्णु) – ह्+अ+र्+इ
  - विधि (ब्रह्मा) – व्+इ+ध्+इ
  - गिरि (पर्वत) – ग्+इ+र्+इ
- शब्दों के अन्त में उकार (उ) वर्ण –
  - गुरु – ग्+उ+र्+उ
  - भानु (सूर्य) – भ्+आ+न्+उ
  - ऊरु (जांघ) – ऊ+र्+उ
- शब्दों के अन्त में नकार (न) वर्ण –

  आत्मन् (आत्मा), महिमन् (महिमा), गरिमन् (गरिमा)

2. जिन शब्दों के अन्त में घञ्, अप्, अच्, कि, नङ्, इमनिच् आदि प्रत्यय हो, वह शब्द पुल्लिग होता है –

- शब्दों के अन्त में घञ् प्रत्यय –
  - पाकः (पकाना, पकना) – पच्+घञ्
  - रागः (रंगना) – रञ्ज्+ घञ्

- शब्दों के अन्त में अप् प्रत्यय –
  - यवः (जौ, मिलाना) – यु+अप्
  - स्तवः (स्तुति करना) – स्तु+अप्
  - पवः (साफ करना) – पू+अप्
- शब्दों के अन्त में अच् प्रत्यय–
  - चयः (चुनना) – चि+अच्
  - जयः (जीतना) – जि+अच्
- शब्दों के अन्त में कि प्रत्यय –
  - उपधिः (दम्भ) – उपधा+कि,
  - विधिः (ब्रह्मा) – विधा+कि
  - प्रधिः (पहिए का घेरा) – प्रधा+कि,
- शब्दों के अन्त में नङ् प्रत्यय–
  - प्रश्नः – प्रच्छ्+नङ्
  - यत्नः – यत्+नङ्
  - विश्नः (कान्ति, प्रताप) – विच्छ्+नङ्
- शब्दों के अन्त में इमनिच् प्रत्यय –
  - महिमा – महत्+इमनिच्

3. जिन समस्त पदों के अन्त में अह्न, अह, अथवा रात्र आदि शब्द हो, वह पद पुल्लिंग होते हैं –

- समस्त पद के अन्त में अह्न शब्द –
  - पूर्वाह्णः – पूर्व+अह्न
  - पराह्णः – पर+अह्न
  - मध्याह्नः – मध्य+अह्न
- समस्त पद के अन्त में अह शब्द –
  - एकाहः – एक+अह
  - त्र्यहः – त्रि+अह
- समस्त पद के अन्त में रात्र शब्द –
  - सर्वरात्रः – सर्व+रात्र
  - मध्यरात्रः – मध्य+रात्र

4. शब्द के अर्थ के आधार पर –

- मासवाची शब्द– ज्येष्ठः (ज्येष्ठ महिना), आषाढः (आषाढ का महिना) आदि।
- ऋतुवाची शब्द– ग्रीष्मः (ग्रीष्म ऋतु), वसन्तः (वसन्त ऋतु)
- रसवाची– कटुः (कडवा), तिक्तः (तीखा), मधुरः (मीठा) आदि।
- वर्णवाची (रंग का वाचक)– शुक्लः (सफेद रंग), कृष्णः (काला रंग) आदि।
- देवतावाची– देवः (देवता), विष्णुः (विष्णु देवता), शिवः (शिव देवता)
- असुरवाची– दैत्यः, दानवः आदि।
- अंगवाची शब्द – हस्तः (हाथ), पादः (पैर) आदि

5. अन्य शब्द– स्वर्गः, असुः (प्राण), यागः (यज्ञ), अद्रिः (पर्वत), मेघः (मेघ/बादल), अब्धिः (समुद्र),शंखः, अहिः (सर्पः), शरः (बाण) आदि।

स्त्रीलिंग–

1. जिन शब्दों के अन्त में आकार, ईकार, ऊकार आदि वर्ण हों, जो शब्द एक अच् (स्वर) के हैं, वे प्रायः स्त्रीलिंग शब्द होते हैं। जैसे–

- शब्दों के अन्त में आकार (आ) वर्ण–
  - अजा (बकरी) – अ+ज् +आ,
  - सीता (सीता नाम की स्त्री) – स्+ई+त्+आ
- शब्दों के अन्त में ईकार (ई) वर्ण –
  - नदी – न्+अ+द्+ई,
  - कुमारी – क्+उ+म्+आ+र्+ई
- शब्दों के अन्त में ऊकार (ऊ) वर्ण – भू (पृथ्वी), श्वश्रू
- एक अच् (स्वर) वाले शब्द –
  - धी (बुद्धि)– ध्+ई (अच्)
  - श्री (लक्ष्मी) – श्+र्+ई (अच्)

2. जिन शब्दों के अन्त में टाप्, क्तिन्, तल्, ङीप्, ङीष् अथवा ङीन्, ऊङ् आदि प्रत्यय हो, वे स्त्रीलिंग शब्द होते हैं, जैसे –

- शब्द के अन्त में टाप् प्रत्यय – एडका (भेड)– एडक+ टाप्, अश्वा (घोड़ी) आदि।
- शब्द के अन्त में क्तिन् प्रत्यय – मतिः (बुद्धि) – मन्+क्तिन्, गतिः, सम्पत्तिः आदि।
- शब्द के अन्त में तल् प्रत्यय – लघुता – लघु+ता, सुन्दरता आदि
- शब्द के अन्त में ङीप् प्रत्यय – कुरुचरी (कुरु देश में घूमने वाली स्त्री) – कुरुचर+ ङीप्
- शब्द के अन्त में ङीष् प्रत्यय – गौरी (पार्वती, गौर वर्ण की स्त्री) – गौर+ ङीप्
- शब्द के अन्त में ङीन् प्रत्यय – ब्राह्मणी (ब्राह्मण स्त्री) – ब्राह्मण+ ङीन्
- शब्द के अन्त में ऊङ् प्रत्यय – वामोरू (सुन्दर जंघा वाली स्त्री) – वामोरु+ऊङ्

3. शब्द के अर्थ के आधार पर –

- तिथिवाची शब्द – प्रतिपत्, द्वितीया, चतुर्थी, पूणिमा आदि।

4. विंशति से नवति शब्द पर्यन्त संख्यावाची शब्द स्त्रीलिंग होते हैं, जैसे– विंशतिः (बीस), त्रिंशत् (तीस) आदि।

5. अन्य शब्द – विद्युत् (बिजली), निशा (रात), वल्ली (लता), दिक् (दिशा) आदि।

नपुंसकलिंग–

1. जिन शब्दों के अन्त में ल्युट्, क्त, त्व, ष्यञ्, यत्, ढक्, यक्, अण्, अञ्, वुञ्, छ, षण् आदि प्रत्यय हो, वे नपुंसकलिंग शब्द होते हैं, जैसे–

- शब्दों के अन्त में ल्युट् प्रत्यय – गमनम् (जाना) –गम्+ल्युट्, शयनम् (सोना) आदि।
- शब्दों के अन्त में क्त प्रत्यय – गतः (गया)– गम्+क्त, हसितम् (हँसा) आदि।
- शब्दों के अन्त में त्व प्रत्यय – शुक्लत्वम्, नील. त्वम् आदि।
- शब्दों के अन्त में ष्यञ् प्रत्यय – सौन्दर्यम् (सुन्दर+ ष्यञ्), माधुर्यम् आदि।
- शब्दों के अन्त में यत् प्रत्यय – लभ्यम् – लभ्+यत्, शप्यम् आदि।
- शब्दों के अन्त में षण् प्रत्यय – शैशवम् – शिशु+ षण्, गौरवम् आदि।

2. शत आदि संख्यावाची शब्द नपुंसकलिंग होते हैं, जैसे– शतम् (सौ), सहस्रम् (एक हजार) आदि।

3. अव्ययीभाव एवं समाहारद्वन्द्व समस्त पद नपुं. सकलिंग होते हैं–

- अव्ययीभाव समस्त पद – प्रतिदिनम् आदि।
- समाहारद्वन्द्व समस्त पद – पाणिपादम्, हस्त्यश्वम् आदि।

वचन (संख्या)

संस्कृत में तीन वचन होते हैं –

1. एकवचन– इससे एक संख्या का बोध होता है। जैसे– एकः बालकः (एक बालक), एका बालिका (एक बालिका), एकं पुस्तकम् (एक पुस्तक)।
2. द्विवचन– इससे दो संख्या का बोध होता है। जैसे– द्वौ बालकौ (दो बालक), द्वे बालिके (दो बालिका),
3. बहुवचन– इससे दो से अधिक संख्या का बोध होता है। जैसे– त्रयः बालकाः (तीन बालक), चतस्रः बालिकाः (चार बालिकाएं), पञ्च वृक्षाः (पाँच वृक्ष), पुस्तकानि (बहुत सारी पुस्तकें)

पुरुष

संस्कृत में तीन पुरुष होते हैं–

1. **प्रथम पुरुष**–रमेशः (रमेश नाम का व्यक्ति), चषकः (गिलास), वनम् (वन) आदि संज्ञा शब्द एवं सः (वह पुरुष), सा (वह स्त्री) आदि सर्वनाम शब्द

2. **मध्यम पुरुष**–त्वम् (तुम), युवाम् (तुम दोनों), यूयम् (तुम सब)

3. **उत्तम पुरुष**– अहम् (मैं), आवाम् (हम दोनों), वयम् (हम सब)

पुल्लिंग– शब्द

क्र.सं.	संज्ञा शब्द	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
1.	बालक	बालकः (एक बालक)	बालकौ (दो बालक)	बालकाः (दो से अधिक बालक)
2.	अश्व	अश्वः (एक घोडा)	अश्वौ (दो घोडे)	अश्वाः (दो से अधिक घोडे)
3.	मयूर	मयूरः (मोर)	मयूरौ (दो मोर)	मयूराः (दो से अधिक मोर)
4.	शिष्य	शिष्यः (एक शिष्य)	शिष्यौ (दो शिष्य)	शिष्याः (दो से अधिक शिष्य)
5.	गायक	गायकः (एक गायक)	गायकौ (दो गायक)	गायकाः (दो से अधिक गायक)

स्त्रीलिंग – संज्ञा शब्द

क्र.सं.	संज्ञा शब्द	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
1.	बालिका	बालिका (एक बालिका)	बालिके (दो बालिकाएँ)	बालिकाः (दो से अधिक बालिका)
2.	नदी	नदी (एक नदी)	नद्यौ (दो नदियाँ)	नद्यः (दो से अधिक नदी)
3.	बाला	बाला (एक स्त्री)	बाले (दो स्त्रीयाँ)	बालाः (दो से अधिक स्त्रियाँ)
4.	नर्तिका	नर्तिका (एक नृत्यांगना)	नर्तिके (दो नृत्यांगनाएं)	नर्तिकाः (दो से अधिक नृत्यांगनाएं)
5.	छात्रा	छात्रा (एक छात्रा)	छात्रे (दो छात्राएं)	छात्राः (दो से अधिक छात्राएं)

नपुंसकलिंग– संज्ञा शब्द

क्र.सं.	संज्ञा शब्द	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
1.	पुस्तक	पुस्तकम् (एक पुस्तक)	पुस्तके (दो पुस्तक)	पुस्तकानि (दो से अधिक पुस्तक)
2.	फल	फलम् (एक फल)	फले (दो फल)	फलानि (दो से अधिक पुस्तक)
3.	गीत	गीतम् (एक गीत)	गीते (दो गीत)	गीतानि (दो से अधिक गीत)
4.	पत्र/पत्ता	पत्रम् (एक पत्ता)	पत्रे (दो पत्ते)	पत्राणि (दो से अधिक पत्ते)
5.	पंखा	व्यजनम् (एक पंखा)	व्यजने (दो पंखे)	व्यजनानि (दो से अधिक पंखे)

सर्वनाम शब्द रूप

1.	तद् (पुल्लिंग)	सः (वह)	तौ (वे दोनों)	ते (वे सभी)
2.	तद् (स्त्रीलिंग)	सा (वह)	ते (वे दोनों)	ताः (वे सभी)
3.	तद् (नपुंसकलिंग)	तत् (वह)	ते (वे दोनों)	तानि (वे सभी)
4.	अस्मद्	अहम् (मैं)	आवाम् (हम दोनों)	वयम् (हम सभी)
5.	युष्मद्	त्वम् (तुम)	युवाम् (तुम दोनों)	यूयम् (तुम सब)

विशेषण–श्वेत (सफेद) शब्द रूप

क्र.सं.	शब्द	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
1.	श्वेत (पुल्लिंग)	श्वेतः (एक सफेद)	श्वेतौ (दो सफेद)	श्वेताः (दो से अधिक सफेद)
2.	श्वेत (स्त्रीलिंग)	श्वेता (एक सफेद)	श्वेते (दो सफेद)	श्वेताः (दो से अधिक सफेद)
3.	श्वेत (नपुंसकलिंग)	श्वेतम् (एक सफेद)	श्वेते (दो सफेद)	श्वेतानि (दो से अधिक सफेद)

धातु (क्रिया)

किसी कार्य का करना या होना क्रिया कहलाता है, जैसे– दौडना, जाना, पढना, लिखना, गाना, पकाना, खाना, पीना, चलना, कूदना आदि। संस्कृत भाषा में क्रियावाची शब्द धातु कहलाते हैं, जैसे – धाव् (दौडना), गम् (जाना), पठ् (पढना), लिख् (लिखना), खाद् (खाना), नृत् (नृत्य करना), वद् (बोलना), वस् (रहना), त्यज् (छोडना), क्रीड् (खेलना), हस् (हंसना), रक्ष् (रक्षा करना), अस् (होना) आदि।

धातुरूप–

वद् (बोलना)– लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष / वचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वदति (एक बोलता / बोलती है)	वदतः (दो बोलते हैं)	वदन्ति (दो से अधिक बोलते / बोलती हैं)
मध्यम पुरुष	वदसि (तुम बोलते हो)	वदथः (तुम दोनों बोलते हो)	वदथ (तुम सब बोलते हैं)
उत्तम पुरुष	वदामि (मैं बोलता / बोलती हूँ)	वदावः (हम दोनों बोलते हैं)	वदामः (हम सब बोलते हैं)

धाव् (दौडना)– लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष / वचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	धावति (एक दौडता / दौडती है)	धावतः (दो दौडते हैं)	धावन्ति (दो से अधिक दौडता / दौडती है)
मध्यम पुरुष	धावसि (तुम दौडते हो)	धावथः (तुम दोनों दौडते हो)	धावथ (तुम सब दौडते हो)
उत्तम पुरुष	धावामि (मैं दौडता / दौडती हूँ)	धावावः (हम दोनों दौडते हैं)	धावामः (हम सब दौडते हैं)

पच् (पकाना)– लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष / वचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचति (एक पकाता / पकाती है)	पचतः (दो पकाते हैं)	पचन्ति (दो से अधिक पकाते हैं)
मध्यम पुरुष	पचसि (तुम पकाते हो)	पचथः (तुम दोनों पकाते हो)	पचथ (तुम सब पकाते हो)
उत्तम पुरुष	पचामि (मैं पकाता हूँ)	पचावः (हम दोनों पकाते हैं)	पचामः (हम सब पकाते हैं)

अनुवाद के लिए नियम–

- वाक्य संरचना– वाक्य के अन्तर्गत प्रायः कर्ता, कर्म एवं क्रिया आदि होते हैं।

  वाक्य= कर्ता + कर्म + क्रिया।

- संस्कृत भाषा में वाक्य निर्माण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वाक्य में क्रिया का प्रयोग कर्ता (कार्य करने वाला) के अनुसार किया जाता है अर्थात् कर्ता जिस पुरुष, एवं वचन का होता है, क्रिया भी उसी पुरुष एवं वचन की होती है। जैसे–

  बालकः गच्छति (बालक जाता है)।

  यहाँ कर्ता (जाने की क्रिया करने वाला)
  बालकः– प्रथमपुरुष, एकवचन
  क्रिया गच्छति– प्रथमपुरुष, एकवचन।

- क्रिया तीनों लिंगों में समान होती है।
- विशेषण के विभक्ति, वचन, लिंग विशेष्य के अनुसार होते हैं अर्थात् विशेष्य (संज्ञा) के जो विभक्ति, वचन एवं लिंग होते हैं, वही विभक्ति, वचन, लिंग विशेषण के होते हैं, जैसे– श्वेतं वस्त्रम् (सफेदवस्त्र)
  विशेष्य (वस्त्रम्)– नपुंसकलिंग, एकवचन
  विशेषण (श्वेतं)–, नपुंसकलिंग, एकवचन

प्रारम्भिक संस्कृत में उपयोग में आने वाले सामान्य वाक्य–

1. बालकः विद्यालयं गच्छति (बालक विद्यालय जाता है)।

   बालकः (कर्ता) – प्रथमपुरुष, एकवचन, पुल्लिग

   गच्छति (क्रिया) – प्रथमपुरुष, एकवचन

   कर्म – विद्यालयं

2. बालकौ विद्यालयं गच्छतः (दो बालक विद्यालय जाते हैं)।

   बालकौ (कर्ता) – प्रथमपुरुष, द्विवचन, पुल्लिग

   गच्छतः (क्रिया) – प्रथमपुरुष, द्विवचन,

   कर्म – विद्यालयं

3. बालकाः विद्यालयं गच्छन्ति (दो से अधिक बालक विद्यालय जाते हैं।

   बालकाः (कर्ता)– प्रथमपुरुष, बहुवचन, पुल्लिग

   गच्छन्ति (क्रिया)– प्रथमपुरुष, बहुवचन,

   कर्म– विद्यालयं

4. बालिका भोजनं पचति (बालिका भोजन पकाती है)।

   बालिका (कर्ता)– प्रथमपुरुष, एकवचन, स्त्रीलिंग

   पचति (क्रिया)– प्रथमपुरुष, एकवचन

   कर्म – भोजन

5. बालिके भोजनं पचतः (दो बालिकाएं भोजन पक. ाती हैं)।

   बालिके (कर्ता)– प्रथमपुरुष, द्विवचन, स्त्रीलिंग

   पचतः (क्रिया)– प्रथमपुरुष, द्विवचन

   कर्म – भोजनं

6. बालिकाः भोजनं पचन्ति (बालिका भोजन पकाती हैं)।

   बालिकाः (कर्ता)– प्रथमपुरुष, बहुवचन, स्त्रीलिंग

   पचन्ति (क्रिया)– प्रथमपुरुष, बहुवचन

   कर्म– भोजनं

7. सः गीतं गायति (वह गीत गाता है)।

   सः (कर्ता)– सर्वनाम शब्द, प्रथमपुरुष, एकवचन, पुल्लिग

   गायति (क्रिया)– प्रथमपुरुष, एकवचन

   कर्म– गीतं

8. तौ छात्रौ फलं खादतः (वे दोनों छात्र फल खाते हैं।)

   तौ छात्रौ (कर्ता)– तौ (सर्वनाम शब्द), छात्रौ (संज्ञा शब्द), प्रथमपुरुष, द्विवचन, पुल्लिग

   खादतः (क्रिया)– प्रथमपुरुष, द्विवचन

   कर्म– फलं

9. ते मयूराः नृत्यन्ति (वे (दो से अधिक) मोर नाच रहे हैं)।

ते मयूराः (कर्ता)– ते (सर्वनाम शब्द), मयूराः (संज्ञा शब्द), प्रथमपुरुष, बहुवचन, पुल्लिंग

नृत्यन्ति (क्रिया)– प्रथमपुरुष, बहुवचन

10. सा बालिका क्रीडति (वह बालिका खेलती है)।

सा बालिका (कर्ता)– सा (सर्वनाम शब्द), बालि. का (संज्ञा शब्द), प्रथमपुरुष, एकवचन, स्त्रीलिंग

क्रीडति (क्रिया)– प्रथमपुरुष, एकवचन

11. ते बालिके क्रीडतः (वे दो बालिका खेलती हैं)।

ते बालिके (कर्ता)– ते (सर्वनाम शब्द), बालिके (संज्ञा शब्द), प्रथमपुरुष, द्विवचन, स्त्रीलिंग

क्रीडतः (क्रिया)– प्रथमपुरुष, द्विवचन

12. ताः बालिकाः क्रीडन्ति (वे (दो से अधिक) बा. लिका खेल रही हैं)।

ताः बालिकाः (कर्ता)– ताः (सर्वनाम शब्द), बालि. काः (संज्ञा शब्द), प्रथमपुरुष, बहुवचन
स्त्रीलिंग
क्रीडन्ति (क्रिया)– प्रथमपुरुष, बहुवचन

13. तत् पुस्तम् अस्ति (वह पुस्तक है)।

तत् पुस्तकम् (कर्ता)–तत् (सर्वनाम शब्द), पुस्. तकम् (संज्ञा शब्द), प्रथमपुरुष, एकवचन, नपुं. सकलिंग
अस्ति (क्रिया)– प्रथमपुरुष, एकवचन

14. ते पुस्तके स्तः (वे दो पुस्तक हैं)।

ते पुस्तके (कर्ता)– ते (सर्वनाम शब्द), पुस्तके (संज्ञा शब्द), प्रथमपुरुष, द्विवचन, नपुंसकलिंग

स्तः (क्रिया)– प्रथमपुरुष, द्विवचन

15. तानि पुस्तकानि सन्ति (वे सब पुस्तक हैं)।

तानि पुस्तकानि (कर्ता)– तानि (सर्वनाम शब्द), पुस्तकानि (संज्ञा शब्द), प्रथमपुरुष, बहुवचन, नपुंसकलिंग
सन्ति (क्रिया)– प्रथमपुरुष, बहुवचन

16. अत्र श्वेतः कपोतः वसति (यहाँ सफेद कबूतर रहता है)।

श्वेतः कपोतः (कर्ता)– श्वेत (विशेषण शब्द), कपोतः (संज्ञा), प्रथमपुरुष, एकवचन, पुल्लिंग

वसति (क्रिया)– प्रथमपुरुष, एकवचन)

17. कृष्णौ अश्वौ धावतः (दो काले घोडे दौडते हैं)।

कृष्णौ अश्वौ (कर्ता)– कृष्णौ (विशेषण शब्द), अश्वौ (संज्ञा शब्द), प्रथमपुरुष, द्विवचन, पुल्लिंग

धावतः (क्रिया)– प्रथमपुरुष, द्विवचन

18. धीमन्ताः छात्राः प्रश्नं पृच्छन्ति (श्रेष्ठ छात्र प्रश्न पूछ रहे हैं)

धीमन्ताः छात्राः (कर्ता)– त्रय (संख्यावाची विशेषण), छात्रा (संज्ञा शब्द), प्रथमपुरुष, बहुवचन, पुल्लिंग

पृच्छन्ति (क्रिया)– प्रथम पुरुष, बहुवचन

कर्म– प्रश्नं

19. शोभना बाला हसति (सुन्दरी स्त्री हंस रही है)

शोभना बाला (कर्ता)– शोभना (विशेषण), बाला (संज्ञा शब्द), प्रथमपुरुष, एकवचन, स्त्रीलिंग
हसति (क्रिया)– प्रथम पुरुष, एकवचन

20. चंचले बालिके क्रीडतः (दो चंचल बालिका खेल रही हैं)

चंचले बालिके (कर्ता)– चंचले (विशेषण शब्द), बालिके (संज्ञा शब्द), प्रथमपुरुष, द्विवचन, स्त्रीलिंग

क्रीडतः (क्रिया)– प्रथमपुरुष, द्विवचन

21. कृष्णाः अजाः पत्राणि खादन्ति (काली बकरियां पत्ते खा रही हैं)

कृष्णाः अजाः (कर्ता)– कृष्णाः (विशेषण शब्द), अजाः (संज्ञा शब्द), प्रथमपुरुष, बहुवचन, स्त्रीलिंग

खादन्ति (क्रिया)– प्रथम पुरुष, बहुवचन

कर्म– पत्राणि

22. तत् उद्यानं मनोहरम् अस्ति (वह उद्यान मनोहर है)।

तत् उद्यानं (कर्ता) – तत् (सर्वनाम शब्द), उद्यानं (संज्ञा शब्द), प्रथमपुरुष, एकवचन, नपुंसकलिंग

मनोहरम् – विशेषण शब्द, प्रथमपुरुष, एकवचन, नपुंसकलिंग

अस्ति (क्रिया)– प्रथमपुरुष, एकवचन

23. पीते पत्रे पततः (दो पीले पत्ते गिरते हैं)

पीते पत्रे (कर्ता)– पीते (विशेषण शब्द), पत्रे (संज्ञा शब्द), प्रथम पुरुष, एकवचन, नपुंसकलिंग

पततः (क्रिया)– प्रथम पुरुष, एकवचन

24. त्वं लेखं लिखसि किम् (तुम लेख लिख रहे हो क्या ?)

त्वं (कर्ता)– मध्यम पुरुष, एकवचन

लिखसि (क्रिया)– मध्यम पुरुष, एकवचन

कर्म– लेखं

25. युवां किं पठथः (तुम दोनों क्या पठ रहे हो ?)

युवां (कर्ता)– मध्यमपुरुष, द्विवचन

पठथः (क्रिया)– मध्यमपुरुष, द्विवचन

26. यूयं पाठं न पठथ (तुम सब पाठ नहीं पढ रहे)

यूयं (कर्ता) – मध्यमपुरुष, बहुवचन

पठथ (क्रिया) – मध्यमपुरुष, बहुवचन

कर्म– पाठं

27. अहं चलचित्रं पश्यामि (मैं चलचित्र देख रहा/रही हूं)

अहम् (कर्ता)– उत्तमपुरुष, एकवचन

पश्यामि (क्रिया)– उत्तमपुरुष, एकवचन

कर्म– चलचित्रं

28. आवां गीतं गायावः (हम दोनों गीत गाते हैं)

आवां (कर्ता)– उत्तमपुरुष, द्विवचन

गायावः (क्रिया) – उत्तमपुरुष, द्विवचन

कर्म– गीतं

29. वयं प्रतिदिनं फलानि खादामः (हम सब प्रतिदिन फल खाते हैं)

वयं (कर्ता)– उत्तमपुरुष, बहुवचन

खादामः (क्रिया)– उत्तमपुरुष, बहुवचन

कर्म– फलानि

इस प्रकार शब्द, लिंग, वचन, पुरुष, धातु (क्रिया) के सम्यक् ज्ञान एवं प्रयोग के माध्यम से संस्कृत को समझने में सहायता मिल सकती है।